बिहार में नृत्यकला

बिहार में विभिन्न लोक नृत्यों की सजीव परंपरा मिलती है। मिथिला तथा भोजपुर में प्रचलित अनेक लोकनृत्य हमारी संस्कृति की कलात्मकता तथा उत्सवशीलता के प्रमाण दे जाते हैं। यही नहीं, नृत्य का शास्त्रीय स्वरूप भी यहाँ सैकड़ों वर्ष पहले विकसित हो चुका था। मिथिला के संगीतशास्त्री ज्योतिरीश्वर ठाकुर तथा राजा शुभंकर ठाकुर के उल्लेखों से पता चलता है कि बिहार में बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी तक नृत्य-संगीत पर अनेक ग्रंथ लिखे जा चुके थे। यानी तबतक इस भूमि पर नृत्य के शास्त्रीय रूपों का भी पूर्ण विकास हो चुका था।

डॉ० नगेन्द्र मोहिनी
नृत्य की एक विशेष मुद्रा में

जट-जटिन, झिझिया, करिया-झूमर, बिदापत, सामा-चकेवा, डोमकच (जलुआ), झिंझिर, खेलड़िन, नेटुआ, गोंड, पँवरिया, लौंडा नाच आदि बिहार की अपनी लोक संस्कृति की देन हैं। इन लोकप्रचलित नृत्यों की विशेषता यह रही है कि ये प्रायः कथामूलक, सामूहिक और नाटकीयता के साथ गायन तथा वादन से भी युक्त होते हैं।

जट-जटिन, झिझिया, करिया-झूमर, बिदापत और सामा-चकेवा मिथिला के मुख्य लोकनृत्य हैं। जट-जटिन स्त्रियों का संवादमूलक नृत्य है। वर्षा के लिए किये जाने वाले इस नृत्य में पुरुष-नारी दोनों की भूमिकाएँ नारियाँ ही निभाती हैं और दर्शक भी नारियाँ ही होती हैं। इस नृत्य नाटिका के गायन की मधुर लयात्मकता तल्लीन कर देने वाली होती है। झिझिया भी पूर्णतः नारी नृत्य है जिसमें महिलाओं की ही गोल घेराबंदी के बीच एक औरत छेदों वाले एक घड़े को माथे पर रखती है। उस घड़े में एक दीपक रखा होता है। घेरा बनाने वाली नारियों के गायन तथा नृत्य की लय-ताल अपनी तीव्रता में सबको विभोर कर जाती हैं। इस नृत्य का तंत्र-मंत्र की दृष्टि से अनुष्ठानिक महत्त्व भी

डॉ० नगेन्द्र मोहिनी
एक अन्य मुद्रा में

होता है। करिया-झूमर में एक दूसरे के हाथ में हाथ डालकर लड़कियाँ गोलाकार घूमती हुई नाचती हैं। यह नाच साँझ या रात में होता है। विशेष रूप से मिथिला में प्रचलित बिदापत नाच का प्रचलन विशेषकर दलित वर्ग में है। इस सामूहिक गायनपूर्ण नृत्य में मृदंग और खोल बजाये जाते हैं। मिथिला के नारी वर्ग में प्रचलित सामा-चकेवा की एक सर्वथा अलग विशेषता यह है कि इसमें अभिनय और नृत्य के साथ मूर्तियों की भी भागीदारी रहती है। बाँसुरी बजाते कृष्ण के चारों ओर रातभइया, चुगला, खिड़रिच, बनतीतर, कुत्ता, हाथी आदि की मूर्तियाँ रखी जाती हैं। मूर्तियों के चारों ओर नाचती-गाती लड़कियाँ महारास रचाती हैं। मिथिला में प्रचलित कमलापूजा के समय औरतें नाचने लगता है। मछुआरों के इस पूजन नृत्य के अलावा किरतनिया का भी महत्त्व के साथ उल्लेख होता है। झिंझिर लोकनृत्य का प्रचलन बाढ़ वाले इलाके में है। बाढ़ के दिनों में चाँदनी रात में पुरुष-स्त्री नाव पर गायन और नृत्य करके इसका आनंद उठाते हैं।

मधुकर आनंद
नृत्य की मुद्रा में

डोमकच या जलुआ का प्रचलन प्रायः पूरे बिहार में है। यह भी मात्र नारी वर्ग का नृत्य है

©CBSE NOT TO BE PRINTED

जिसमें अभिनय और गायन के भरपूर प्रसंग होते हैं। इसमें ढोलक का स्थिर वादन भी होता है और कमर में बाँधकर नारियाँ बजाती हुई भी नाचती हैं। इसे जलुआ भी कहा जाता है। यह प्रसंग विशेष का नृत्य है। जिस दिन बारात जाती है उस दिन की रात में दूल्हे के घर नारियाँ डोमकच करती हैं। इसमें पुरुषों का प्रवेश निषिद्ध होने के कारण नारियों की उन्मुक्तता पूरी तरह प्रस्फुटित हो आती है। मगहक्षेत्र के गया जिले में नाचने-गाने वाली एक पेशेवर जाति हुआ करती थी। उस जाति की स्त्रियाँ विवाह आदि मांगलिक मौकों पर बुलाई जाती थीं और वे खेलड़िन का नाच प्रस्तुत कर भरपूर पुरस्कार पाती थीं। दस-पंद्रह के पंक्तिबद्ध समूह में वे नाचती हुई गालियाँ भी गाती थीं। वह नृत्य नवादा जिले के रजौली ग्राम में विकसित हुआ था। खेलड़िनें अपने नाच में विभिन्न बाजाओं का भी प्रयोग करती थीं। अब वह नाच लगभग लुप्त हो चुका है।

भोजपुर, भभुआ, रोहतास, बक्सर, छपरा आदि जिलों यानी संपूर्ण भोजपुरी क्षेत्र में नेटुआ, गोंड़, पँवरिया, लौंडा नाच आदि लोक नृत्यों की अनेक धाराएँ अनादि काल से चलती आयी हैं। नेटुआ तो घुमक्कड़ जाति है जिसका एक नाम नट भी है। उस जाति का नाच-गान से पारंपरिक संबंध रहा है। गोंड़ का नाच अपनी अश्लीलता के बावजूद भोजपुरी संस्कृति में विशेष महत्त्व रखता आया है। गोंड़ नाच वाले मंडली में होते हैं और वे हुडुक नामक बाजा विशेष का प्रयोग करते हैं जिसकी धुन और ध्वनि दोनों विशिष्ट होती हैं।

पारसी थिएटर कंपनियों के प्रभाव से पेशेवर नाचमंडलियाँ भोजपुर में भी विकसित हुईं जिनमें पुरुष नर्तकों के नृत्य की परंपरा बनी। भोजपुर में उसे लौंडा नाच कहा जाता है। भिखारी ठाकुर की मंडली वस्तुतः लौंडानाच की ही मंडली थी जिसमें उन्होंने विदेसिया आदि अनेक मौलिक नाटकों की शैलियों को विकसित किया। इसमें नाचने वाले युवक पूरी तरह नारी का वेश धारण कर नाचते हैं जिन्हें सिर्फ आवाज से पहचाना जाता है। लौंडानाच बिहार के अन्य क्षेत्रों के अलावा उत्तर प्रदेश में भी प्रचलित रहा है। पँवरिया का नाच मल्लाहों का नाच होता है जिसमें बाजा बजाते हुए वे उछलते-कूदते रहते हैं और गंगा पूजा के लिए भिक्षाटन करते हैं। भोजपुर क्षेत्र में प्रचलित धोबिया नृत्य पुरुष प्रधान नृत्य है जिसमें पुरुष ही नारी का वेश धारण करता है। इसमें ढोलक के साथ हुडुक या हुडुक बजाया जाता है। किसी भी तरह के पारंपरिक पेशेवर तथा लौंडा नृत्य से अलग नोकनर्तक के रूप में बलराम लालजी ने अपनी स्वतंत्र पहचान विकसित की थी।

पटना सिटी में एक अत्यंत बूढ़े तथा पूर्णतः अपंग व्यक्ति मोथा सिंह रहते हैं जिन्होंने गुड़िया नृत्य (मुखौटा नृत्य) का भरपूर विकास किया था। इस नृत्य में एक तरफ पुरुष और दूसरी तरफ नारी का परिधान धारण कर एक ही नर्तक नृत्य करता है। मुखौटा भी दुमुँहा होता है जिसमें एक तरफ नर का मुँह बना होता है और दूसरी तरफ नारी का। यह अत्यंत कठिन नृत्य माना जाता है, फिर भी है लोकनृत्य ही। यह नृत्य जगत को बिहार की अनोखी देन है।

शास्त्रीय स्तर पर नृत्य के विभिन्न भेदों तथा विविध मुद्राओं आदि का विवेचन तो बिहार

में लगभग बारहवीं शताब्दी से ही मिलने लगता है परंतु हाल-हाल तक शास्त्रीय नर्तकों की कोई वैसी परंपरा बिहार में नहीं मिलती जैसी संगीत के क्षेत्र में ध्रुपद, ठुमरी आदि के गायन तथा वादन की मिलती है। बावजूद इसके बीसवीं शताब्दी में हरि उप्पल, नलिन गांगुली, नगेन्द्र मोहिनी, शिवजी मिश्र और मधुकर आनंद जैसे बड़े साधक नर्तकों ने कथक में बिहार की अपनी विशिष्ट पहचान कायम कर दी।

शांतिनिकेतन से मणिपुरी तथा केरल कलामंडल (केरल) से कथकली नृत्य की शिक्षा लेकर आये हरि उप्पल ने बिहार में शास्त्रीय नृत्य की प्रायः पहली ज्योति जगाई। भिक्षाटन तक करके उन्होंने भारतीय नृत्यकला मंदिर की स्थापना की थी जो नृत्य प्रशिक्षण के लिए आज एक देशविख्यात संस्थान है। हरि उप्पल की विशेषता थी कि कथकली की कोमलता तथा मणिपुरी के वीरभाव दोनों में उन्होंने अपूर्व दक्षता प्राप्त की थी। वैसी दक्षता किसी अन्य नर्तकों में नहीं देखी गयी। बिहार में उन्होंने नृत्य का जो विस्तृत प्रांगण तैयार किया उसमें नलिन गांगुली, नगेन्द्र मोहिनी और मधुकर आनंद जैसे बड़े नर्तक इस प्रांत को उपलब्ध हुए। नलिन गांगुली का विशेष महत्त्व कथक में अपनी विशेष पहचान बनाने के लिए माना जाता है। नगेन्द्र प्रसाद मोहिनी के कथक गुरु गांगुली जी ही थे।

नगेन्द्र मोहिनी कथक तथा भरतनाट्यम में बिहार की एक अनुपम उपलब्धि हैं। लंबा छरहरा शरीर, आत्मीयता में पगी मधुर बोली तथा सहज स्नेहिल स्वभाव वाले मोहिनी जी दर्शक वर्ग को मोह लेने वाले नर्तक के साथ ही नृत्य शिक्षक और नृत्य शास्त्र पर अनेक पुस्तकों के प्रणेता भी हैं। इन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति का आचार्य माना जाता है। नलिन गांगुली, गोपीकृष्ण तथा रामजीवन प्रसाद से इन्होंने नृत्य के अनेक रूपों की शिक्षा पाई है। पटना के नृत्य गुरुओं में पं० शिवजी मिश्र का नाम भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है। मिश्रजी भारतीय नृत्यकला मंदिर में नृत्य के सम्मानित आचार्य हैं।

अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मधुकर आनंद ने अपने नर्तक पिता बलराम लालजी से नृत्य का क ख ग सीखा और पटने में नगेन्द्र मोहनी से कथक की विधिवत शिक्षा पायी थी। परंतु उनकी कुछ प्रस्तुतियों को देख बिहार संगीत नाटक अकादमी के तत्कालीन अध्यक्ष प्रसिद्ध चिकित्सक डा० शिवनारायण सिंह ने उन्हें विश्वविख्यात नर्तक बिरजू महाराज के पास भेज दिया। विश्वविख्यात नर्तक गुरु की स्नेहिल देख-रेख में अपनी प्रखर प्रतिभा तथा सतत साधना से मधुकर जी ने नृत्य में उस स्तर की प्रशंसाएँ पाईं जिनपर बिरजू महाराज को भी गर्व है। पिछले 27 सितंबर 2008 ई० को मधुकर जी का परलोकवास मात्र इकतालीस वर्ष की उम्र में हो गया।

बिरजू महाराज ने बिहार की एक और प्रतिभा शोभना नारायण को निखारा। शोभना जी सरकारी पदाधिकारी भी हैं और अंतरराष्ट्रीय ख्याति की नृत्यांगना भी। बिहार की नृत्यांगनाओं में नीलम चौधरी, रमादास तथा पल्लवी विश्वास ने भी अपनी प्रस्तुतियों से प्रशंसाएँ पाई हैं और नृत्य में रुचि रखने वाली कन्याओं को आत्मीय प्रोत्साहन प्रदान किया है।

अभ्यास

1. बिहार में प्रचलित किसी एक लोकनृत्य का परिचय दीजिए।
2. मगह में किस लोकनृत्य का प्रचलन था? एक संक्षिप्त परिचय दीजिए।
3. कथक नृत्य में बिहार का क्या योगदान रहा है?
4. बिहार के नृत्य जगत में हरि उप्पल का क्या महत्त्व रहा है?
5. भारतीय नृत्य कला मंदिर कहाँ है? उसकी स्थापना किसने की थी?
6. कथक और भरतनाट्यम दोनों के विशेषज्ञ किसी एक बिहारी नर्तक का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
7. गुड़िया नृत्य किसे कहते हैं?
8. बिहार के लोकनृत्य में भिखारी ठाकुर का क्या महत्त्व रहा है?
9. नगेन्द्र मोहिनी का एक संक्षिप्त परिचय दीजिए।
10. मधुकर आनंद पर एक टिप्पणी लिखिए।

पटना कला एवं शिल्प महाविद्यालय (छायांकन : अभिषेक चौबे)